दर्शनशास्त्र का इतिहास
73 19वीं सदी का अनुभववाद,
व्हीटन कॉलेज के डॉ. आर्थर होम्स द्वारा

वेस्टर्न फिलॉसफी के इतिहास में हमारी एक साल की यात्रा का हिस्सा। यानी, चार हफ़्ते लगभग 200 साल के एंपिरिसिज़्म, 19वीं और 20वीं सदी के एंपिरिसिज़्म से जुड़े। और बस नज़रिया समझने के लिए, आइए इस डायग्राम पर वापस आते हैं, जिससे आप परिचित हैं, मॉडर्न एंपिरिसिज़्म और एनलाइटनमेंट के रैशनलिज़्म का मेल, जैसा कि इमैनुअल कांट ने किया था, जिससे दो मेथडोलॉजी के बीच एक अंतर पैदा हुआ जो आज तक फिलॉसफी में बना हुआ है।

एनलाइटनमेंट का रैशनलिज़्म ज़्यादातर यूरोपियन कॉन्टिनेंट पर था, जिसमें डेसकार्टेस, स्पिनोज़ा और लाइबनिज़ शामिल थे। और जैसा कि हमने हेगेल में देखा है, एग्ज़िस्टेंशियल ट्रेडिशन, कुछ हद तक, व्हाइटहेड जैसे लोग। लेकिन इसका नतीजा एक फेनोमेनोलॉजिकल तरह का तरीका है जो असलियत को इंसानी सेल्फ-अवेयरनेस के लेंस से देखने की कोशिश करता है।

अब, जैसा कि हमने पिछले हफ़्ते देखा, आज भी फेनोमेनोलॉजिकल तरीका जारी है, जो कॉन्टिनेंट पर यूरोपियन सोच, वेस्टर्न यूरोपियन सोच पर हावी है। दूसरी ओर, एम्पिरिसिस्ट परंपरा, लॉक, बर्कले और ह्यूम, ज़्यादातर ब्रिटेन में है और 19वीं सदी में उन तीन लोगों के साथ जारी रही, जिनके बारे में हम बात करने जा रहे हैं, ऑगस्ट डी कांट, जॉन स्टुअर्ट मिल और अर्न्स्ट माच। और इनमें सबसे महान अर्न्स्ट माच हैं।

नहीं, इसे वापस ले लो। इनमें सबसे महान जॉन स्टुअर्ट मिल हैं। सॉरी, उनमें से आखिरी अर्न्स्ट माच हैं।

जॉन स्टुअर्ट मिल इस बात पर ज़ोर देते हैं। लेकिन उस लगातार एंपिरिसिस्ट नज़रिए ने इस बात पर ज़ोर दिया कि साइंटिफिक मेथड को सभी तरह के इंसानी ज्ञान के लिए यूनिवर्सल बनाया जाए। अब, जबकि तब, दुनिया को देखने का तरीका, वह लेंस जिससे यूरोपियन ट्रेडिशन के लिए सब कुछ देखा जाता था, वह इंसानी आत्मा है जिसमें उसकी क्रिएटिव आज़ादी है।

और मुझे लगता है कि यह एक सही जनरलाइज़ेशन है, चाहे आप हेगेल की बात कर रहे हों या सार्त्र की या ड्यूई की, आप देखिए। दूसरी ओर, जिस लेंस से 19वीं सदी के एम्पिरिसिस्ट सब कुछ देख रहे हैं, वह बस साइंटिफिक मेथड से देखी गई प्रकृति का लेंस है। और इसलिए, तरीके अलग हो जाते हैं।

अब, आज तक, पूरी 20वीं सदी में, यह कहना सही होगा कि यूरोप महाद्वीप में दबदबा, फ़िलॉसफ़िकल दबदबा फ़ेनोमेनोलॉजिकल है। जबकि अंग्रेज़ी बोलने वाली फ़िलॉसफ़ी में फ़िलॉसफ़िकल दबदबा एम्पिरिसिस्ट है। और भले ही साइंटिफ़िक मेथडोलॉजी के बारे में यह उतना इंपीरियलिस्टिक न हो जितना 20वीं सदी की शुरुआत में मिल में था, फिर भी यह एक

बहुत मज़बूत थीम है कि सभी इंसानी ज्ञान को आंकने के लिए साइंटिफ़िक क्राइटेरिया जैसी किसी चीज़ का इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

तो, यही फ़र्क है। ज़ाहिर है, दोनों के बीच तुलना करने, पुल बनाने की कोशिशें होती हैं। मैंने शायद आपको पहले भी बताया होगा कि 1940 के दशक में, यानी 40 के दशक के आखिर में, इंग्लिश और फ्रेंच फ़िलॉसफ़रों के बीच एक जॉइंट कॉन्फ्रेंस हुई थी।

जिसकी कार्यवाही पब्लिश हुई, जिसका नाम था ला फिलॉसफी एनालिटिक , एनालिटिक फिलॉसफी। और जब आप इसे पढ़ने की कोशिश करते हैं, तो आप पाते हैं कि फ्रेंच लोग इंग्लिश में लिखते हैं, जो हममें से कई लोगों के लिए मददगार है, और इंग्लिश लोग फ्रेंच में लिखते हैं, वे रात में जहाज़ों की तरह गुज़र जाते हैं। क्योंकि वे बस अलग-अलग चीज़ों से निपट रहे होते हैं।

या, करीब पांच साल पहले, मैं टोरंटो में एक कॉन्फ्रेंस में था, जहां यूरोपियन फिलॉसफर थे, फ्रेंच से ज़्यादा डच, और एंग्लो-अमेरिकन, जो रैशनैलिटी के कॉन्सेप्ट पर बात कर रहे थे। वही अनुभव। रात में जहाजों की तरह गुज़रना।

सिर्फ़ इसलिए कि मेथड अलग है और उम्मीदें भी अलग हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि यूरोपियन सोच में कुछ एनालिटिकली ओरिएंटेड फिलॉसफर नहीं हैं। हैं।

या फिर ऐसा कहें कि अमेरिकी सोच में कुछ फेनोमेनोलॉजिकल विचारक नहीं हैं। हैं। वे बड़े डिपार्टमेंट कम से कम एक प्रतिनिधि रखने की कोशिश करते हैं।

हमारे पास एक है। रॉबर्ट्स। बस इतना है कि वह एनालिटिक सोच में भटक गया है।

विट्गेन्स्टाइन पर उनके काम के साथ-साथ कीर्केगार्ड और बुल्टमैन पर उनके काम की वजह से। तो यह सिचुएशन है। अब, आज मैं 19वीं सदी के एंपिरिसिज़्म को बताना चाहता हूँ, और हो सकता है कि हमें सोमवार को भी इसे जारी रखना पड़े, जब हम 20वीं सदी में जा रहे होंगे।

अगले सोमवार, हम बर्ट्रेंड रसेल, जॉन स्टुअर्ट मिल, जॉर्ज अर्नेस्ट मूर और जीई मूर जैसे लोगों के साथ 20वीं सदी की शुरुआत में जाएँगे। लेकिन 19वीं सदी की खासियत के लिए, इन तीन बातों पर ध्यान दें। ज्ञान की ऑब्जेक्टिविटी का विस्तार, और मैंने हाइपोथेटिको-डिडक्टिव मेथड लिखा है, शायद इसे थोड़ा और साफ़ करने के लिए, एक हाइपोथेटिको-डिडक्टिव मेथड में।

कहने का मतलब है, ज्ञान की भावना से साइंस पर लागू होने वाला एक तरीका। कांटियन तरह की कोपरनिकन क्रांति को नकारना। अब, हाइपोथेटिको-डिडक्टिव तरीके से मेरा क्या मतलब है, यह बात? आप पाएंगे कि यह बात ज़्यादा जानी-पहचानी होती जा रही है।

लेकिन 18वीं सदी के इन एम्पिरिसिस्ट्स के पिछले ज्ञान के विचार में, बेशक, ऐसे आधार थे जो एंपिरिकल जनरलाइज़ेशन थे, और उससे, डिडक्टिव इनफेरेंस थे। और अगर हम डेसकार्टेस, स्पिनोज़ा जैसे कॉन्टिनेंटल रैशनलिस्ट्स की बात कर रहे हैं, तो आपके पास एक तरह का

इंट्यूटिव , सेल्फ-एविडेंट, इनेट, ए प्रायोरी आधार और डिडक्टिव मेथड है। दूसरे शब्दों में, ज्ञान के विचार का मेथोडोलॉजी आधार से डिडक्शन के ज़रिए लॉजिकल नतीजे तक था।

या तो पहले से बनी बातें या फिर अनुभव से निकली बातें। 19वीं सदी के अंदरूनी विचार वगैरह पर शक है। अनुभव से निकली बातों को वेरिफाई करना बहुत मुश्किल है।

आप उन्हें गलत साबित कर सकते हैं, लेकिन उन्हें एंपिरिकल रूप से वेरिफ़ाई करना काफ़ी मुश्किल है , और आपको इंडक्शन की प्रॉब्लम है। इसलिए एंपिरिकल जनरलाइज़ेशन या पहले से तय आधार के बजाय, आधार के तौर पर हाइपोथीसिस पर ज़ोर दिया जाता है। तो, एक एंपिरिकल हाइपोथीसिस से, अगर यह सच है, तो क्या होता है? हाइपोथेटिको-डिडक्टिव।

तो, डिडक्टिव मेथड की ओर ले जाने वाले आधार के लिए एक हाइपोथीसिस। अब, यह असल साइंटिफिक मेथड के ज़्यादा करीब है। याद रखें, फ्रांसिस बेकन और उनके इंडक्टिव मेथड की एक आलोचना यह थी कि उन्होंने हाइपोथीसिस के इस्तेमाल के लिए कोई जगह नहीं दी।

एक्सपेरिमेंटल तरीके, लेकिन बिना हाइपोथीसिस के। खैर, यहाँ आप एक ज़्यादा मैच्योर अप्रोच, 19वीं सदी, और हाइपोथेटिकल डिडक्टिव मेथड देखते हैं। यह जॉन स्टुअर्ट मिल, अर्न्स्ट मैक, बर्ट्रेंड रसेल और 20वीं सदी के लॉजिकल पॉजिटिविज़्म में साइंटिफिक मेथड की समझ बन जाती है।

असल में, थॉमस कुह्न की किताब, द स्ट्रक्चर ऑफ़ साइंटिफिक रेवोल्यूशन्स तक यह बात समझ में नहीं आई थी, जब यह माना गया कि साइंस हाइपोथीसिस के बजाय पैराडाइम के साथ ज़्यादा काम करता है। ठीक है? तो इसे ध्यान में रखें। अब, दूसरी खासियत।

उस तरीके, हाइपोथेटिकल डिडक्टिव का ह्यूमन साइंस तक विस्तार। पहले, साइंस को सिर्फ़ फ़िज़िक्स और एस्ट्रोनॉमी से जुड़ा हुआ समझने की आदत थी। यहीं से इसकी शुरुआत हुई।

केमिस्ट्री इस खेल में आई। धीरे-धीरे बायोलॉजी भी आई। लेकिन 19वीं सदी में खास बात यह थी कि इस तरह के तरीकों का ह्यूमन साइंस तक विस्तार हुआ।

यानी साइकोलॉजी, सोशियोलॉजी, पॉलिटिक्स। इसे एथिक्स पर भी लागू करने की कोशिश, ताकि एथिक्स एक एंपिरिकल साइंस बन सके। जॉन स्टुअर्ट मिल अपने यूटिलिटेरियनिज़्म में ठीक यही चाहते थे।

वह एक एंपिरिकल साइंटिफिक एथिक चाहते थे। इसलिए उस साइंटिफिक मेथड का इंसानी ज्ञान, सोशल साइंस के नेचुरल साइंस तक विस्तार, कुछ जगहों पर इसे साइंटिज्म के नाम से जाना जाता है । साइंटिज्म ।

कि साइंस और सिर्फ़ साइंस से ही भरोसेमंद ज्ञान मिलता है। साइंटिज़्म । और हाँ, इस बीच हमारे कॉन्टिनेंटल दोस्तों को इस तरह की चीज़ों से परेशानी होगी।

इंसानी आत्मा का क्या? फेनोमेनोलॉजिकल मेथड वगैरह का क्या? असल में, आप हुसरल की उस कोशिश के बारे में सोच सकते हैं जिसे उन्होंने साइंस में संकट कहा था। वह फिलॉसफी को एक सख्त साइंस बनाना चाहते हैं, लेकिन किसी हाइपोथेटिकल मेथड से नहीं। आप देखिए, फेनोमेनोलॉजिकल मेथड से निकले प्रायोरी प्रिंसिपल्स के साथ।

तो फिर, ये बातें हैं, लेकिन इनका एक नतीजा है। और साइंटिफिक मेथड के ग्लोबल लेवल पर इस एक्सटेंशन का नतीजा है फेनोमेनलिज़्म, एंटी-रियलिज़्म और एंटी-मेटाफ़िज़िक्स का डेवलपमेंट। हाँ, फेनोमेनलिज़्म, हम बस फेनोमेनन ही जानते हैं।

चीज़ें जैसी हमें दिखती हैं। जिसे हम आजकल एंटी-रियलिज़्म कहते हैं। हम उस परम सत्य के ज्ञान को नहीं जानते जो वह अपने आप में है ।

और जिस तरह से यह सामने आता है, खासकर 19वीं सदी में, वह मेटाफ़िज़िक्स को नकारना है। और मुझे लगता है कि 19वीं सदी में यह खास तौर पर ज़रूरी है क्योंकि मेटाफ़िज़िक्स के नेचर को, आप देखिए, फ़िनॉमिना-नौमेना के फ़र्क के हिसाब से देखा जाता था। अगर आप चाहें, तो इसे ज्ञान की रिप्रेज़ेंटेशनल थ्योरी की रोशनी में देखें, जिसने आपके मन में उस असलियत के बारे में बहुत सारे बिना जवाब वाले सवाल छोड़ दिए, जिसे इसे दिखाना चाहिए था।

यह ध्यान देने वाली बात है कि ब्रैडली जैसे लोगों के मेटाफ़िज़िक्स पर काम के टाइटल 'अपीयरेंस एंड रियलिटी' होते हैं। ब्रैडली का भी यही टाइटल था, 'अपीयरेंस एंड रियलिटी'। अब, असल में, पॉज़िटिविस्ट मूवमेंट यह कह रहा है कि हम सिर्फ़ दिखावे को जानते हैं , और असलियत को खारिज कर रहा है।

जॉन स्टुअर्ट मिल को पढ़ते समय ध्यान दें। अगर आप मन और शरीर के बारे में सवाल में दिलचस्पी रखते हैं, तो मन क्या है? मिल कहते हैं, मन बस रिफ्लेक्शन, रिफ्लेक्शन के विचारों की परमानेंट संभावना है। अब, मन कोई चीज़ नहीं है।

हम इसकी असलियत के बारे में कुछ नहीं जानते। मन शब्द से हमारा मतलब है, खैर, वह जो शायद भविष्य में आगे के अनुभव से जुड़ा है, सोचने-समझने की हमेशा की संभावना। खैर, बात क्या है? एहसास की हमेशा की संभावना।

आप कहते हैं, यह मायने नहीं रखता, यह मायने रखता है। खैर, फेनोमेनन, हमारे लिए यही है। तो, कॉम्टे, मिल और मार्क में एक पूरी तरह से फेनोमेननिस्ट नज़रिया डेवलप होता है।

बर्ट्रेंड रसेल, हाँ और नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप बर्ट्रेंड रसेल के करियर के किस दशक के बारे में पढ़ रहे हैं। उन्होंने इंसान के मन बदलने के अधिकार को सुरक्षित रखा और कई बार इसे काफी सफलतापूर्वक किया। तो, यही उनकी खासियत है।

अब, यह इन लोगों में कैसे सामने आता है? खैर, सबसे पहले , ऑगस्ट कॉम्टे, एक फ्रांसीसी, की मौत 1857 में हुई थी। आपके पास स्टंपफ में कॉम्टे के बारे में एक चैप्टर है, और आपके पास

गार्डनर की एंथोलॉजी में कुछ सिलेक्शन हैं। आपको कॉम्टे को समझना और पढ़ना आसान लगेगा।

पर ध्यान दें । एक है उनका तीन स्टेज का नियम। दूसरा है विज्ञान की एकता के बारे में उनका तर्क।

अब, तीन स्टेज का नियम साइंस के इतिहास के बारे में उनका एक एंपिरिकल जनरलाइज़ेशन है। वह एक एंपिरिसिस्ट हैं, और उन्हें साइंस के इतिहास में दिलचस्पी है। तो, वह आपको साइंस के इतिहास के बारे में एक एंपिरिकल जनरलाइज़ेशन देने जा रहे हैं।

यानी, साइंस तीन स्टेज से गुज़रता है। धार्मिक स्टेज से, सोच-विचार वाले स्टेज तक, फिर साइंटिफिक स्टेज तक। अब, धार्मिक स्टेज से, बेशक, थियोलॉजी, माइथोलॉजी वगैरह बनती हैं।

फिक्शन , इमैजिनेटिव फिक्शन , जैसे कि डिवाइन राइट ऑफ किंग्स, जिसके लिए चार्ल्स। ने अपना सिर खो दिया था, आपको याद है। या प्रिमिटिव एनिमिज्म में फेटिश। डिवाइन प्रोविडेंस की धारणाएं।

यह इंसानी मन का कल्पनाशील बचपन है। दूसरा स्टेज सोच-विचार वाला है। इसमें एब्स्ट्रैक्ट आइडिया, कंस्ट्रक्ट, मेटाफिजिकल कंस्ट्रक्ट , जैसे यूनिवर्सल और एसेंस की थ्योरी से डील किया जाता है।

नेचुरल लॉ एथिक्स और न्यायशास्त्र। नेचुरल राइट्स की थ्योरी। डेमोक्रेटिक आदर्श, जैसे सभी इंसान बराबर पैदा होते हैं, शायद ही अनुभव से निकले सामान्यीकरण हों।

टेलीओलॉजी, कीमिया, ज्योतिष और अंतिम कारणों की धारणाएँ। आप देखिए, इन सभी में छिपी हुई सच्चाइयों के बारे में अंदाज़े वाली थ्योरी शामिल हैं। यह इंसानी दिमाग की जवानी है।

लेकिन तीसरा स्टेज एंपिरिकल, साइंटिफिक है, जो इस बात से जुड़ा है कि क्या पॉजिटिव रूप से पता है, हम क्या पॉजिटिव रूप से कह सकते हैं। इसलिए, पॉजिटिविज्म शब्द बना। क्या पॉजिटिव रूप से कहा जा सकता है।

ज़रूर। यह इंसानी दिमाग की मैच्योरिटी है , बड़ा होना है। और यहीं साइंटिफिक स्टेज पर, हम जो करने की कोशिश करते हैं, वह है आम नियम बनाना।

जनरल कवरिंग लॉ एक एंपिरिकल जनरलाइज़ेशन है जो सारे डेटा को कवर करता है। जनरल कवरिंग लॉ। और इन्हीं जनरल लॉ, जनरलाइज़ेशन के आधार पर आप अपने प्रेडिक्शन कर सकते हैं।

और इसलिए, नेचुरल प्रोसेस का इस्तेमाल करने के लिए टेक्नोलॉजी डेवलप करें। तो, पॉजिटिव स्टेज वह है, जिस ओर साइंस बढ़ रहे हैं। अब, वह इस तरह से अलग-अलग साइंस को ट्रेस करने की कोशिश करते हैं।

धर्म मेटाफिजिकल स्टेज तक विकसित हो गया है। बहुत सारी थियोलॉजी बस मेटाफिजिक्स है। केमिस्ट्री, बेशक, पुराने फेटिशिज्म से एल्केमी के ज़रिए साइंस, एंपिरिकल साइंस तक विकसित हुई है।

विज्ञान को विकसित होते देखना चाहते हैं । सामाजिक बदलाव का विज्ञान। आखिरकार, वह 19वीं सदी के पहले आधे हिस्से में फ्रांस में रह रहे हैं।

और अगर आप फ्रेंच इतिहास से वाकिफ हैं, तो वह उथल-पुथल का दौर था। इसलिए, हम सामाजिक बदलाव का एक साइंस, एक एंपिरिकल साइंस चाहते हैं। और यही वह शुरुआत है जो अब सोशियोलॉजी बन गई है।

सोशल मेजर्स, अगर आप अपने साइंस के इतिहास को देखेंगे , तो आपको पता चलेगा कि इसकी शुरुआत ऐसे ही हुई थी। ओह, एक और आदमी था, लगभग उसी का, थोड़ा बड़ा, ऑगस्ट कॉर्न के साथ, सेंट-साइमन नाम का एक आदमी। लेकिन सोशियोलॉजी पूरी तरह से एंपिरिकल होने की कोशिश में शुरू हुई थी।

और यह हाल के सालों में ही हुआ है, एक या दो दशक की बात है, कि सोशियोलॉजी ने कुछ फेनोमेनोलॉजिकल ट्रेडिशन को शामिल करना शुरू किया है और सब्जेक्टिविटी वगैरह को पहचानना शुरू किया है, मैक्स वेबर जैसे लोगों का असर। अब, ऑगस्ट कॉर्न में साइंस की एकता पर दूसरा ज़ोर दिया गया है। बहुत आसान है।

यह सोच है कि सभी साइंस असल में एक ही तरीका अपनाते हैं। सभी साइंस असल में एक ही तरीका अपनाते हैं। नेचर की स्टडी और इंसानों की स्टडी में कोई फ़र्क नहीं है।

दोनों के लिए एक ही तरीका लागू होना चाहिए। और साइंस की एकता की यह थीसिस कांट की उन बातों में से एक है जो 20वीं सदी तक बनी रही , साइंस की एकता पर ज़ोर। ड्यूई इसी पर काम कर रहे हैं, जहाँ वे रिकंस्ट्रक्शन और फिलॉसफी में डेवलप्ड साइंटिफिक तरीके को लेने की कोशिश करते हैं और कहते हैं कि इसे सोशल चेंज, सोशल प्रॉब्लम को हैंडल करने, पॉलिटिक्स, एजुकेशन, वगैरह-वगैरह पर लागू करने की ज़रूरत है।

साइंस की एकता। साइंस के बीच अंतर कॉम्प्लेक्सिटी के अंतर हैं। इसमें, उदाहरण के लिए, सोशियोलॉजी को साइकोलॉजी पर बनाना पड़ता है ।

साइकोलॉजी को बायोलॉजी पर आधारित होना चाहिए । बायोलॉजी को केमिस्ट्री पर आधारित होना चाहिए । केमिस्ट्री को फिजिक्स पर आधारित होना चाहिए ।

फ़िज़िक्स को मैथ्स पर बनाना होता है । इसलिए, साइंस की कॉम्प्लेक्सिटी के हिसाब से उनकी एक हायरार्किकल व्यवस्था होती है। और यह दिलचस्प है कि ऐतिहासिक रूप से वे उसी क्रम में और ज़्यादा कॉम्प्लेक्स होते गए हैं।

तो, यह ऑगस्टे डे कांट के बारे में मेरी समरी है। ध्यान दें, अगर आपके पास गार्डनर एंथोलॉजी है, तो क्या आप उसे लाए थे? मुझे आपको पहले ही बता देना चाहिए था। पेज 151 पर डेसकार्टेस के बारे में उनके कमेंट्स पर ध्यान दें।

हर फ्रेंच फिलॉसफर को डेसकार्टेस यूनियन को अपना हक देना होता है । और ये है कांट का हक। जब डेसकार्टेस दुनिया को पॉजिटिव फिलॉसफी का एक पूरा सिस्टम बनाने की शानदार सेवा दे रहे थे, हाँ, आप पक्के तौर पर जानते हैं, रिफॉर्मर, अपनी सारी हिम्मत वाली एनर्जी के बावजूद, अपनी उम्र से इतना ऊपर नहीं उठ पाए कि उसे फिजियोलॉजी के उस हिस्से को समझकर पूरा लॉजिकल एक्सटेंशन दे सकें जो इंटेलेक्चुअल और मोरल घटनाओं से जुड़ा है।

फिजियोलॉजी का वह हिस्सा जो इंटेलेक्चुअल और मोरल घटनाओं से जुड़ा है। सबसे आसान और यूनिवर्सल घटनाओं की बेसिक थ्योरी पर एक बड़ी मैकेनिकल हाइपोथीसिस बनाने के बाद, उन्होंने उसी फिलॉसॉफिकल सोच को जानवरों के शरीर की अलग-अलग बेसिक सोच, रिश्तों तक बढ़ाया। लेकिन जब वे भावनाओं और बुद्धि पर पहुँचे, तो उन्होंने अचानक रुककर उनसे मेटाफिजिको -थियोलॉजिकल फिलॉसफी के तौर पर एक खास स्टडी बनाई।

ऐसा शब्द ज़रूर कुछ बुरा होता है। इस तरह उन्होंने इसकी साइंटिफिक नींव को खत्म करने में कहीं ज़्यादा कामयाबी हासिल करने के बाद इसे एक नई तरह की ज़िंदगी देने की कोशिश की। और अगले पेज पर, नीचे 152 पर, आप देखिए, वह अफेक्टिव और इंटेलेक्चुअल फंक्शन्स की पॉजिटिव थ्योरी के पीछे हैं, जो यह है।

इसमें अंदरूनी इंद्रियों की घटनाओं, रिफ्लेक्शन के विचारों, सेरेब्रल गैंग्लिया, ब्रेन फिजियोलॉजी के अलावा, सभी बाहरी उपकरणों की एक्सपेरिमेंटल और रैशनल स्टडी शामिल है। उनके पास ब्रेन साइंस होनी चाहिए थी। तो वह जो चाहते हैं वह बहुत साफ है, और आप देखेंगे कि साइंटिफिक मेथड के इस एक्सटेंशन की वजह से, वह उसी तरह के मेथोडोलॉजिकल नेचुरलिज़्म की वकालत कर रहे हैं जैसा हमें जॉन डेवी में मिला था।

सही? जैसे हम जॉन डेवी से मिले थे । मुझे लगता है इसीलिए मेरे एक प्रोफेसर ने एक बार यह कहकर एक सेमिनार शुरू किया था कि उनके हिसाब से पॉजिटिविज़्म और प्रैग्मैटिज़्म दोनों एक ही चीज़ हैं, और वे दोनों बंद गली हैं। समझे ? क्योंकि वे खुद को एंपिरिकल साइंस की सीमाओं तक ही सीमित रखते हैं।

ठीक है। सवाल? कमेंट्स? मुझे लगता है कि यह बहुत आसान है, और आप शायद इसे तुरंत समझ जाएंगे। ठीक है।

जॉन स्टुअर्ट मिल. मुझे लगता है कि यह कहना सही होगा कि मिल सभी एम्पिरिसिस्ट में सबसे ज़्यादा एम्पिरिकल हैं. आपका मतलब है कि लॉक और ह्यूम से भी ज़्यादा? हाँ.

ह्यूम ने, आप देखिए, दो तरह के ज्ञान की बात की। असल बातें, विचारों के संबंध। विचारों के संबंध एनालिटिक सत्य हैं, विषय में मौजूद प्रेडिकेट, जैसे गणित।

मिल का मानना है कि मैथ एक एंपिरिकल साइंस है। तीन और पांच बराबर आठ, तीन और पांच के सभी सेट के बारे में एक एंपिरिकल जनरलाइज़ेशन है। तो, एनालिटिक सच, असल में एंपिरिकल जनरलाइज़ेशन हैं, या अगर आप चाहें तो एंपिरिकल हाइपोथीसिस हैं।

सोच के नियम, नॉन-कॉन्ट्राडिक्शन, पहचान, A बराबर A, और नॉन-A नहीं, ये हमारे सोचने और भाषा का इस्तेमाल करने के तरीके के बारे में एंपिरिकल जनरलाइज़ेशन हैं। दूसरे शब्दों में, मिल जो कर रहे हैं, वह इन पहले प्रिंसिपल्स को साइकोलॉजिकल जनरलाइज़ेशन में बदलना है। जनरलाइज़ेशन , यानी, मन कैसे सोचता है, इसके बारे में।

और यही वह बात है जिसका हुसरल ने साइकोलॉजिज्म से मतलब निकाला था , जिसकी उन्होंने बुराई की थी। साइकोलॉजिज्म, मैथमेटिक्स, लॉजिक, वगैरह के लिए सही बेस नहीं देता, आपको याद होगा। साइकोलॉजिज्म ।

तो यह वही चीज़ है जिसके खिलाफ़ हुसरल लड़ रहे थे, जिसका हमने वहाँ अंदाज़ा लगाया था। लेकिन इस कदम में, मिल सभी सहज ज्ञान, सभी जन्मजात ज्ञान, सभी खुद-ब-खुद साबित सच को नकार रहे हैं। असल में, एपिस्टेमोलॉजी पर उनके लेखन का एक बड़ा हिस्सा सर विलियम हैमिल्टन के दर्शन की आलोचना करने वाले काम में लिखा गया था, जो स्कॉटिश रियलिस्ट में से एक थे।

और आप जानते हैं, स्कॉटिश रियलिस्ट, थॉमस रीड की परंपरा में, खुद-ब-खुद सच की बात कर रहे थे। वो सच जिन पर हम इंसानी मन की आदतों की वजह से, जो इंसानी बनावट में बनी होती हैं, जिसे भगवान ने बनाया है, अपने आप यकीन करने लगते हैं। और मिल एनलाइटनमेंट की भावना से जो कर रहे हैं, वह यह कह रहे हैं कि यह काफी पक्का नहीं है, यह काफी पॉजिटिव नहीं है।

ये सच बस एंपिरिकल जनरलाइज़ेशन हैं। अगर आप चाहें तो एंपिरिकल हाइपोथीसिस। अब, यह कहना कि जनरलाइज़ेशन और सेल्फ-एविडेंट सच असल में हाइपोथीसिस हैं, आपको यह देखने में मदद करता है कि मिल ने हाइपोथेटिकल डिडक्टिव मेथड कैसे डेवलप किया।

लेकिन इससे आपको यह देखने में भी मदद मिलती है कि वह कैसे एक एम्पिरिसिस्ट हो सकता है और उन प्रिंसिपल्स के बारे में बात कर सकता है जिन पर डिडक्शन काम करता है, उन्हें एम्पिरिकल बताकर। एक सिलोजिज्म में, आप देखिए, न सिर्फ प्रीमिसेस होने चाहिए, बल्कि उसमें वैलिड इनफेरेंस, लॉजिक के नियमों के अनुसार कनेक्शन भी होने चाहिए । लेकिन अगर लॉजिक के नियम एम्पिरिकल जनरलाइजेशन हैं और प्रीमिसेस एम्पिरिकल जनरलाइजेशन, हाइपोथीसिस हैं, अगर आप चाहें, तो आपके पास, असल में, एम्पिरिक नॉलेज के मैनिपुलेशन के तौर पर एक सिलोजिज्म है।

बस यही। वह मानते हैं कि इंडक्टिव रीज़निंग, प्रकृति की एकरूपता, इंडक्शन के सिद्धांत और प्रकृति की एकरूपता को पहले से मानती है। मिल ने इस बात की ओर इशारा किया था।

खैर, मिल के अनुसार, प्रकृति की एकरूपता बस हमारी सबसे बड़ी एंपिरिकल हाइपोथीसिस है। यह एक एंपिरिकल जनरलाइज़ेशन है जिसे हर चीज़ पर लागू किया जाता है। ठीक है, यही हाइपोथीसिस है।

और इसलिए, यह पूरी तरह से एंपिरिकल प्रोसीजर है। लॉजिक पर अपने काम में, मिल ने लॉजिक पर बहुत कुछ लिखा, और उन्होंने बेकन के इंडक्टिव तरीकों को बेहतर बनाया। आपको उनकी प्रेजेंस टेबल, एब्सेंस टेबल, वगैरह याद होंगे।

उन्होंने असल में उन्हीं तरीकों को बेहतर बनाया, लेकिन थोड़ी करीबी डेफ़िनिशन दी ताकि पॉज़िटिव नॉलेज के लिए वैसी सटीकता मिल सके जैसी वे चाहते थे। अब, इस तरह वे न सिर्फ़ नेचुरल साइंस, बल्कि इंसानी नेचर के साइंस को भी देखते हैं। तो, जैसा कि मैं अभी कह रहा था, जब वे मैटर के नेचर के बारे में पूछते हैं, तो उनका जवाब बहुत आसान, बहुत आसान होता है, कि मैटर, उस शब्द का मतलब, एंपिरिकल रेफरेंस, उसका मतलब, बस सेंसेशन की परमानेंट पॉसिबिलिटी है।

एंपिरिकल नज़रिए से, उम, मैटीरियल बॉडीज़ के होने का मतलब है कि सेंसेशन मुमकिन हैं। और इसी तरह, मन के होने का मतलब है रिफ्लेक्शन की परमानेंट संभावना। खैर, आप देखिए, वह बस जॉन लॉक के बिज़नेस पर ही काम कर रहे हैं, सेंसेशन के सिंपल आइडिया, रिफ्लेक्शन के सिंपल आइडिया।

लेकिन मैटर की असलियत को सब्सटेंस, सबस्ट्रेटम मानने वाले लॉक के नज़रिए को छोड़कर, और मन या आत्मा की असलियत को इमैटेरियल सब्सटेंस, यानी सोचने वाली चीज़ मानने वाले लॉक के नज़रिए को छोड़कर, वह मेटाफ़िज़िक्स करने से मना कर रहा है, अंदाज़ा लगाने से मना कर रहा है। उम, ध्यान दें कि, उम, यह डेविड ह्यूम के बहुत करीब है, जिन्होंने मन को बस परसेप्शन का एक बंडल कहा था। असल में, मुझे लगता है कि यह डेविड ह्यूम जितना, उम, स्केप्टिकल नहीं है।

देखिए, जब ह्यूम ने कहा कि हम मन के बारे में जो कुछ भी जानते हैं, वह सिर्फ़ सोच का बंडल है, तो वह हमारे अभी के सोच की बात कर रहे थे, जिसमें वे यादें शामिल हैं जिन्हें हम अतीत की समझते हैं, और वे उम्मीदें जो हम भविष्य की समझते हैं। लेकिन ह्यूम के लिए, मन बस सोच का यह अभी का बंडल है। उस अभी के अनुभव के अलावा, हमारे पास कोई जानकारी नहीं है, अभी के अनुभव से परे असल बातों की कोई जानकारी नहीं है, यह सोच का बंडल है।

लॉक ने बेशक पर्सनल कंटिन्यूटी, यादों के ज़रिए पर्सनल पहचान, पास्ट को जानने पर ज़ोर दिया था, जिसे ह्यूम मानते हैं कि वैलिड नहीं है। यह सच हो सकता है। हम इसे साबित नहीं कर सकते।

लेकिन, जब मिल परमानेंट पॉसिबिलिटी कहते हैं, तो उनका मतलब होता है, उम्म, मैटर या माइंड के बारे में एंपिरिकल जनरलाइज़ेशन, जिसे हाइपोथीसिस कहा जाता है। आप देखिए, अगर सेंसेशन की परमानेंट पॉसिबिलिटी है, अगर रिफ्लेक्शन की परमानेंट पॉसिबिलिटी है, तो

यह सिर्फ़ परसेप्शन के मौजूदा बंडल से कहीं ज़्यादा है। यह पर्सनल कंटिन्यूटी है, कम से कम कॉन्शसनेस की कंटिन्यूटी।

तो, उम, वह मेटाफ़िज़िक्स करने से मना कर रहा है। आप, उम, इसके और जीन-पॉल सार्त्र के बीच के रिश्ते के साथ खेल सकते हैं। कोई ट्रांसेंडेंटल ईगो नहीं।

मेरे लिए लिया गया हर नया नज़रिया मुझे नया बनाता है । समझे ? ऐसा लगता है जैसे वह कह रहा है कि मेरे लिए खुद बस नए विचारों और नए अनुभवों की एक परमानेंट संभावना है। तो, उम, 19वीं सदी में इंग्लिश फिलॉसफी में हमारे पास लगभग यही नतीजा है, जिस पर सार्त्र 20वीं सदी में कॉन्टिनेंटल सोच में आते हैं।

आप देखिए, खुद का खत्म होना। सच में। खुद का खत्म होना।

उम, अब, यही वजह है कि मिल जो एथिक बनाते हैं, उनका यूटिलिटेरियन एथिक, उम, एक ऐसी प्रॉब्लम का सामना करता है जो अक्सर उस पर डाली जाती है। यूटिलिटी प्रिंसिपल, बेशक, कहता है कि हमें ज़्यादा से ज़्यादा लोगों के लिए खुशी को ज़्यादा से ज़्यादा और दर्द को कम से कम करना चाहिए। यह कह रहा है कि आपको लोगों को दर्दनाक और सुखद अनुभवों के कलेक्शन के तौर पर देखना चाहिए।

लेकिन अगर आप मिल हैं और खुद को अनुभवों की हमेशा रहने वाली संभावना मानते हैं, तो आप और क्या कर सकते हैं? नैतिक रूप से आप बस इतना कर सकते हैं कि खुद को उसी तरह देखें और अच्छे अनुभवों को ज़्यादा से ज़्यादा करने की कोशिश करें। कांट परंपरा में लोगों के सम्मान के लिए यूटिलिटेरियनिज़्म में कोई आधार नहीं है । सीधी सी बात है, उनके पास अनुभवों के बंडल से आगे व्यक्ति की कोई समझ नहीं है।

आप समझे? न्याय। मानवाधिकार। ये वो शब्द हैं जो हम कुछ काम की चीज़ों को देते हैं जिनसे अच्छे अनुभव मिलते हैं।

इसलिए हम न्याय को उसके काम के लिए महत्व देते हैं, इसलिए नहीं कि वह सही है। कोई पहले का अधिकार नहीं है क्योंकि लोगों के अंदरूनी अधिकार होने का कोई कॉन्सेप्ट नहीं है। इसीलिए जॉन स्टुअर्ट मिल को सज़ा की एक यूटिलिटेरियन थ्योरी बनानी पड़ी, जहाँ पहले सज़ा को बदला लेने वाले नज़रिए से देखा जाता था।

वैसे, बदले की सज़ा बदला या बदला नहीं है। अब यह एक साइकोलॉजिकल प्रोसेस है। बदला बस किसी इंसान को ज़िम्मेदार ठहराना है, उसे ज़िम्मेदार ठहराना है, और जैसे कि, समाज में किसी ऐसी चीज़ का बैलेंस बनाए रखने की कोशिश करना जो उसकी नहीं है।

यह, उस शब्द में, चीज़ों के बीच सोशल बैलेंस बनाने की एक कोशिश है। खैर, यह एक ऐसी सोच है जिसका मिल के पास कोई आधार नहीं होगा, और इसलिए उन्होंने जेरेमी बेंथम के नैतिकता और कानून के सिद्धांतों पर आधारित, सज़ा की एक यूटिलिटेरियन थ्योरी बनाई, जिसमें बेंथम ने अपराधी को सुधारने, अपराधी को रोकने के लिए सज़ा देने की वकालत की , बिना अपराधी को

क्लासिक अर्थों में नैतिक रूप से दोषी ठहराए। और इसलिए आज तक, आप पाते हैं कि हमारे समाज में सज़ा की दो थ्योरी हैं, कम से कम सज़ा की दो थ्योरी हैं।

एक , रिट्रिब्यूटिविस्ट, दूसरा यूटिलिटेरियन, कभी-कभी दोनों का कॉम्बिनेशन। कांट और एक्विनास ने एक रिट्रिब्यूटिविस्ट थ्योरी बताई थी, लेकिन इसमें एक टेलियोलॉजी शामिल थी। सज़ा का एक मकसद होता है।

हाँ, एक मुक्ति का मकसद, उम्मीद है, आप देखेंगे। लेकिन हमारे समाज में, ये दो हैं, और मोटे तौर पर, हमारी सज़ा देने वाली संस्थाएँ सज़ा की यूटिलिटेरियन थ्योरी पर काम करती हैं। कुछ साल पहले, ब्रिटेन में एक डेवलपमेंट हुआ था, जिसने यूटिलिटेरियन एथिक पर आधारित, सज़ा की थेराप्यूटिक थ्योरी की वकालत की थी।

कहने का मतलब है, इसे सज़ा बिल्कुल मत कहो; इसे थेरेपी कहो। आइडिया यह है कि क्रिमिनल इमोशनली परेशान है, सोशली ठीक से एडजस्ट नहीं हुआ है, इसलिए किसी तरह की साइकोलॉजिकल थेरेपी की ज़रूरत है। और इससे काफी हंगामा हुआ क्योंकि ऐसा लगा कि इससे पर्सनल ज़िम्मेदारी और भी कम हो गई।

आपको पता होगा कि CS लुईस का इस पर एक आर्टिकल 'गॉड इन द डॉक' नाम के कलेक्शन में है, एक आर्टिकल जिसका नाम 'द ह्यूमैनिटेरियन थ्योरी ऑफ़ पनिशमेंट' है, क्योंकि उसे ह्यूमैनिटेरियन थ्योरी कहा जाता था, और उनका तर्क है कि यह बस इंसान को अमानवीय बना देता है। यह किसी इंसान को ऐसे इंसान के तौर पर नहीं देखता जिसने कुछ किया, बल्कि एक एनवायरनमेंटल मशीन के एक हिस्से के तौर पर देखता है जिसके पास कोई चॉइस नहीं थी। इसलिए उस कॉन्टेक्स्ट में फ्रीडम और डिटरमिनिज्म का फिलॉसॉफिकल मुद्दा बहुत गंभीर हो जाता है।

खैर, मिल आज़ादी और डिटरमिनिज़्म, लिबर्टी और ज़रूरत के सवाल पर बात करते हैं। और, एंटी-मेटाफिजिकल होने के नाते, उन्हें नेसेसिटेरियनिज़्म को मना करना पड़ता है , जिसे वे आजकल कभी-कभी हार्ड डिटरमिनिज़्म कहते हैं। कहने का मतलब है, हर इंसानी फैसले और काम के लिए इतने कारण होते हैं कि कोई दूसरा फैसला या काम नहीं हो सकता था।

नेसेसिटेरियनिज़्म। पहले के कारण ज़रूरी और काफ़ी दोनों हैं। अब, यह कॉज़ेशन का एक नज़रिया है, जो एक ऐसा फ़िनॉमिनलिस्ट है जिसे वह रोक नहीं सका।

इसका मतलब यह होगा कि हम जानते हैं कि ह्यूम ने जिसे ज़रूरी कनेक्शन कहा था, और वह ह्यूम से सहमत थे कि हम नहीं जानते। तो फिर हमारे पास नेसेसिटेरियनिज़्म को रिजेक्ट करने का तरीका है। दूसरी ओर, वह लिबर्टेरियनिज़्म से खुश नहीं हैं, जिसे आजकल आमतौर पर इनडिटरमिनिज़्म कहा जाता है।

यह सोच कि इंसान की पसंद, इंसान की मर्ज़ी, आज़ाद है और वह जो करता है उसके अलावा कुछ और भी चुन सकता है। उसे यह पसंद नहीं है। और उसे यह इसलिए पसंद नहीं है क्योंकि इसमें लगातार कनेक्शन होते रहते हैं।

ह्यूम के शब्दों में, मोटिव और एक्शन के बीच लगातार जुड़ाव, जिसमें एक्टिव विल भी शामिल है, हम देखते हैं। कहने का मतलब है, कुछ पहले से मौजूद साइकोलॉजिकल फैक्टर होते हैं जो किसी भी एक्शन को करने के लिए ज़रूरी होते हैं । इसलिए ऐसा लगता है कि उन पहले से मौजूद फैक्टर और एक्शन के बीच लगातार जुड़ाव होता रहता है।

हम यह नहीं कह सकते कि उन्हें इसकी ज़रूरत है । यह एक मेटाफिजिकल थ्योरी है। हमें यह नहीं पता।

तो उनके पास एक तरह का कम्पैटिबिलिज़्म है, जैसा कि कभी-कभी इसे कहा जाता है, या सॉफ्ट डिटरमिनिज़्म। वह यह पक्का करना चाहते हैं कि हाँ, हम फ़ैसले लेते हैं। हम चुनाव करते हैं।

इस मायने में, हाँ, इच्छा, एक ऐसा विकल्प जो बाहरी कारणों से बंधा नहीं है। लेकिन वह इस बात से इनकार करते हैं कि वे विकल्प अंदरूनी कारणों से बंधे नहीं हैं, नहीं, वह इस बात से इनकार करते हैं कि वे अंदरूनी कारणों से नहीं हैं। खैर, और यह, बेशक, यहाँ यह नज़रिया, यह सॉफ्ट डिटरमिनिज़्म, साफ़ तौर पर उनके यूटिलिटेरियन एथिक वगैरह को बढ़ावा देता है।

क्योंकि अगर ऐसा है कि हम उन वजहों पर रिस्पॉन्ड करते हैं जो, हमारी आम सोच के हिसाब से , खुशी या दर्द की ओर ले जाएंगी, तो जिन वजहों पर हम चुनाव करते समय रिस्पॉन्ड करते हैं, वे उसी हिसाब से असर डालेंगी, और इसलिए एक यूटिलिटेरियन तरीका इसका नतीजा है। ठीक है। उनकी यूटिलिटेरियन नैतिकता इससे बहुत अच्छे से निपटती है।

उन्होंने विश्वास की एक थ्योरी बनाई जो आज़ादी की थ्योरी जैसी ही है। कि विश्वास अपनी मर्ज़ी से नहीं चुने जाते, बल्कि वे साइकोलॉजिकली बनाए जाते हैं। अब, इसकी जड़ें भी ह्यूम में हैं।

ह्यूम की विश्वास की साइकोलॉजी याद है? लगातार मिलने वाले कनेक्शन मन को कुछ खास चीज़ों की उम्मीद करने, या यह सोचने की आदत डालते हैं कि कोई ज़रूरी कनेक्शन है। तो उनकी विश्वास की साइकोलॉजी डेविड हिल जैसी ही है। खैर, मिल में यही तस्वीर है, और आप देख सकते हैं, मुझे उम्मीद है कि यह काफी साफ़ है, कि हाइपोथेटिकल डिडक्टिव मेथड ह्यूमन साइंस तक बढ़ा है, हाँ, मन के बारे में बात करने में, आज़ादी और ज़रूरत के बारे में बात करने में, एथिक्स के बारे में बात करने में।

आप समझे? हाँ? अगर आप किसी खास काम के खुशी-दुख के नतीजों का अंदाज़ा लगाने जा रहे हैं और अपने काम के फैसले लेने जा रहे हैं, तो आपको अपनी आम हाइपोथीसिस की ज़रूरत होती है। तो इसका ह्यूमन साइंस तक विस्तार बहुत आसान है , और इसी तरह, ठीक है, मिल? मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा, एस्थर। हाँ।

ठीक है। उनके 'पॉसिबिलिटी' शब्द के इस्तेमाल को अरस्तू के शब्द से कन्फ्यूज़ मत करना, जहाँ पॉसिबल असलियत बनने की प्रोसेस में है। समझे ? सेंसेशन की परमानेंट पॉसिबिलिटी से उनका

मतलब बस इतना है कि जब हम कुर्सी, डेस्क, इंक मार्कर, इंसानी शरीर के बारे में बात करते हैं, तो हमारा मतलब यह होता है कि हम सोचते हैं कि ऐसी चीज़ें दिखाई देती हैं, टैंजिबल हैं।

देखा ? आखिर में ध्यान दें: दिखने वाला, छूने लायक, सुनाई देने वाला, छूने लायक। देखा ? कहने का मतलब है, अगर शरीर जैसी चीज़ें हैं, तो जब तक वे हैं, इंद्रियों से होने वाले अनुभवों की संभावना है। बस इतना ही।

तरह के सेंस एक्सपीरियंस हुए हैं , क्या मैं एस्थर को दोबारा देख पाऊंगा, आप देखिए, यह एक कंटिंजेंट मामला है। लेकिन यह कहना कि एस्थर असली है, वह ज़िंदा है, बॉडी एग्ज़िस्टेंस है, इसका मतलब यह नहीं है कि वह एक विज़िबल बीइंग है। लेकिन न्यूटोनियन स्पेसियल ऑक्यूपेंट के मतलब में मैटर, वह कुछ और है।

यह कुछ ऐसा है जो हम नहीं कर सकते। अब, मन के साथ भी ऐसा ही है। जब मैं आपके मन के बारे में बात करता हूँ, जब आप अपने मन के बारे में बात करते हैं, तो आप असल में यह कह रहे होते हैं कि मन होने का मतलब है कि आपके पास चेतना की हर तरह की अवस्थाएँ होंगी जिन पर आप सोच-विचार कर सकते हैं।

अब, आप ऐसा करते हैं या नहीं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप काफी देर तक जागते हैं या नहीं। यह एक आकस्मिक मामला है। लेकिन मन होना ही सोचना है।

डेसकार्टेस ने क्या कहा, सोचने वाली चीज़? अब, मिल जो कर रहे हैं, वह उस चीज़ को छोड़ रहे हैं और सिर्फ़ सोचने को बनाए रख रहे हैं। तो यह बस इतना है कि, मेटाफिजिकल हाइपोथीसिस से बचकर, एंपिरिकल हाइपोथीसिस पर टिके हुए हैं। अब, यह थोड़ा अजीब लग सकता है, लेकिन अगर आप इंसानों के बारे में पूरी तरह से एंपिरिकल शब्दों में बात करने की कोशिश कर रहे हैं, तो आप और कैसे करेंगे? खैर, इंसानों के बारे में बात करने का एकमात्र तरीका फिजिकल सेंस डेटा और रिफ्लेक्टिव डेटा के संदर्भ में है।

शरीर की कहानी फिजिकल सेंस डेटा के हिसाब से बताई जाती है, और अंदर की मन की कहानी रिफ्लेक्टिव डेटा के हिसाब से बताई जाती है। इंसानों के बारे में हमारे पास बस इतना ही एंपिरिकल इनपुट है। क्या यह काफी साफ है? ठीक है।

मैं अर्न्स्ट माच के बारे में बस एक-दो बातें कहना चाहता हूँ। 1916 में उनकी मौत हो गई, वे एक ऑस्ट्रियन फिजिसिस्ट थे, और वे दो चीज़ों के लिए ज़रूरी हैं, दो चीज़ें। एक है उनका सेंसेशनलिज़्म, जैसा कि इसे आमतौर पर कहा जाता है।

उन्होंने 'द एनालिसिस ऑफ़ सेंसेशंस' नाम की एक किताब लिखी, जिसमें उन्होंने कहा कि हम अनुभव की हर चीज़ का एनालिसिस उन सेंस क्वालिटीज़ में कर सकते हैं जिन्हें देखा जा सकता है। इसलिए, वह मेहल की तरह ही करना चाहते हैं, अनोखी चीज़ों, अनुभव की चीज़ों को सिर्फ़ सेंस डेटा के हिसाब से बताना। और उस हिसाब से, दुनिया, हमारी दुनिया, हमारी साइंटिफिक दुनिया, सिर्फ़ सेंसेशन्स, सेंस क्वालिटीज़ से बनी है।

साइंस में कोई भी नॉन-एम्पिरिकल मेटाफिजिकल बातें एक्सेप्टेबल नहीं हैं। दूसरी बात जिसके लिए वह ज़रूरी हैं, वह मैकेनिक्स के साइंस पर उनकी एक किताब में सामने आती है, जहाँ वह इस बात पर ज़ोर देते हैं कि एक साइंटिफिक थ्योरी बस सेंस डेटा के बीच रिलेशन को बताने का एक सस्ता तरीका है। अब, इन दोनों बातों को एक साथ रखें, और आपके पास सबसे पहले, साइंस जिस चीज़ के बारे में बात कर सकता है, वह है सेंस डेटा।

दूसरा, इसलिए, साइंटिफिक थ्योरीज़ सिर्फ़ सेंस डेटा से जुड़ी थ्योरीज़ हैं। ठीक है? सेंस डेटा से जुड़ी थ्योरीज़। रिश्ते नहीं दिए गए हैं; सेंस डेटा के बीच रिश्ते।

हम सेंस डेटा को कुछ खास तरीकों से बनाते हैं, ताकि साइंस जिन चीज़ों के बारे में बात करता है, वे आइडियल चीज़ें हों, शानदार चीज़ें जिन्हें हमने बनाया है, न कि वे चीज़ें जैसी वे खुद हैं। अब, साइंस का यह नज़रिया, वेज़ और मिल्स दोनों का ही नज़रिया है जिसे इंस्ट्रूमेंटलिज़्म के नाम से जाना जाता है। साइंटिफिक थ्योरीज़ बस प्रैक्टिकल काम करने के लिए इंस्ट्रूमेंट हैं।

असलियत के बारे में थोड़ी-बहुत जानकारी के बजाय । यह साइंस का क्लासिक एंटी-रियलिस्ट नज़रिया है। तो, ये 19वीं सदी के एंपिरिसिज़्म की तीन खासियतें हैं।

इन बातों को ध्यान में रखें, और हम सोमवार को इन पर वापस आएंगे, जब हम बर्ट्रेंड रसेल को देखेंगे । ठीक है? आपके पास इस हफ़्ते के लिए रीडिंग असाइनमेंट है। आपके पास अगले हफ़्ते के लिए रीडिंग असाइनमेंट है, बस मैं सोमवार को कुछ और जोड़ूंगा।

याद रखें मैंने क्या कहा था, कि बुधवार को हमारे पास एक विज़िटर है जो क्लास में बात करेगा। तो, हम तब आपसे मिलेंगे।